नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत सत्र 2023-24 से पाठ्यपुस्तकों को पुनर्संयोजित किया गया है। यह संजीव पास बुक्स पूर्णतः नवीन पुनर्संयोजित पाठ्यपुस्तकों एवं परिवर्तित पाठ्यक्रम पर आधारित है।

पास बुक्स में नं. 1

संजीव®

पास बुक्स

हिन्दी-IX

(कक्षा 9 के विद्यार्थियों के लिए)

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, अजमेर द्वारा बोर्ड की website पर जून, 2023 में जारी पूर्णतः नवीन परिवर्तित पाठ्यक्रमानुसार

- पाठ्यपुस्तक के सभी अभ्यास प्रश्नों का हल
- सभी प्रकार के अन्य महत्वपूर्ण प्रश्नों का समावेश
- योग्य एवं अनुभवी लेखकों द्वारा लिखित
- प्रथम श्रेणी प्राप्त करने के लिए पूर्ण सामग्री

संजीव प्रकाशन,
जयपुर

मूल्य : ₹ 260/-

प्रकाशक :
संजीव प्रकाशन
धामाणी मार्केट, चौड़ा रास्ता,
जयपुर-3
email : sanjeevprakashanjaipur@gmail.com
website : www.sanjivprakashan.com

© प्रकाशकाधीन

मूल्य : ₹ 260.00

लेजर टाइपसैटिंग :
संजीव प्रकाशन (D.T.P. Department),
जयपुर

मुद्रक :
ओम प्रिन्टर्स, जयपुर

★ ★ ★ ★

NOTATION

Publication of any key/guidebook to any textbook published by any university/board as part of their prescribed syllabus, does not violate the principles and laws of copyright. It is open to any member of the public to publish reviews/criticism/guide/key to the said textbooks.

COPYRIGHT NOTICE

Copyright © 2023 Sanjiv Prakashan. All rights reserved.

सूचना–

इस पुस्तक में त्रुटियों को दूर करने का हर संभव प्रयास किया गया है। किसी भी त्रुटि के पाये जाने पर अथवा किसी भी तरह के सुझाव के लिए आप हमें निम्न पते पर email या पत्र भेजकर सूचित कर सकते हैं–

email : sanjeevprakashanjaipur@gmail.com
पता : प्रकाशन विभाग
संजीव प्रकाशन
धामाणी मार्केट, चौड़ा रास्ता,
जयपुर

आपके द्वारा भेजे गये सुझावों से अगला संस्करण और बेहतर हो सकेगा।

यद्यपि इस पुस्तक को प्रकाशित करने में सभी सावधानियों का पालन किया गया है तथापि किसी भी गलती के लिए प्रकाशक या मुद्रक उत्तरदायी नहीं होंगे।

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, अजमेर द्वारा बोर्ड की website पर जून, 2023 में जारी नवीन परिवर्तित पाठ्यक्रम

हिन्दी कक्षा 9

समय : 3.15 घंटे **पूर्णांक : 100**

अधिगम क्षेत्र	अंक
अपठित बोध	15
रचना	15
व्यावहारिक व्याकरण	15
पाठ्यपुस्तक : क्षितिज (भाग-1)	40
पूरक-पुस्तक : कृतिका (भाग-1)	15

1. अपठित बोध : **15 अंक**

अपठित गद्यांश (आठ बहुचयनात्मक प्रश्न) 08

अपठित काव्यांश (सात बहुचयनात्मक प्रश्न) 07

2. रचना : **15 अंक**

(i) संकेत बिंदुओं पर आधारित किसी एक आधुनिक विषय पर लगभग 200 शब्दों में निबंध-लेखन (विकल्प सहित) 06

(ii) संवाद-लेखन/पत्र-लेखन (विकल्प सहित) 05

(iii) प्रतिवेदन (रिपोर्ट) लेखन (100 शब्द) 04

3. व्यावहारिक-व्याकरण : **15 अंक**

(8 रिक्त स्थान पूर्ति, तीन अतिलघूत्तरात्मक एवं दो लघूत्तरात्मक प्रश्न)

(i) शब्द निर्माण (उपसर्ग-प्रत्यय), विशेषण, लिंग और वचन का विशेषण पर प्रभाव 03

(ii) परसर्ग या कारक 'ने' का क्रिया पर प्रभाव 03

(iii) वाक्य-रचना (सरल और संयुक्त वाक्य) 03

(iv) पर्यायवाची, विलोम, श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द 03

(v) मुहावरे 03

4. पाठ्यपुस्तक एवं पूरक पुस्तक : **(40+15) 55 अंक**

पाठ्यपुस्तक (क्षितिज भाग-1) **40 अंक**

(i) निर्धारित गद्य-पाठों से किन्हीं दो गद्यांशों के विकल्प में से किसी एक पर अर्थग्रहण सम्बन्धी छः प्रश्न 06

(ii) निर्धारित कविताओं से किन्हीं दो पद्यांशों के विकल्प में से किसी एक पर अर्थग्रहण सम्बन्धी छः प्रश्न 06

(iii) 6 अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न (3 गद्य एवं 3 पद्य भाग से) 06

(iv) 5 लघूत्तरात्मक प्रश्न (3 गद्य एवं 2 पद्य भाग से) 10

(v) 1 दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न (गद्य एवं पद्य में विकल्प के साथ) 03

(vi) किसी एक रचनाकार का परिचय (कवि अथवा लेखक के विकल्प के साथ) 04

(vii) 1 निबन्धात्मक प्रश्न (गद्य एवं पद्य में विकल्प के साथ) 05

पूरक-पुस्तक (कृतिका भाग-1) 15 अंक

(i) 3 अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न 03

(ii) 2 लघूत्तरात्मक प्रश्न 04

(iii) 1 दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न (विकल्प सहित) 03

(iv) 1 निबन्धात्मक प्रश्न (विकल्प सहित) 05

निर्धारित पुस्तकें :

1. **क्षितिज–भाग 1**—एन.सी.ई.आर.टी. से प्रतिलिप्याधिकार अन्तर्गत प्रकाशित
2. **कृतिका–भाग 1**—एन.सी.ई.आर.टी. से प्रतिलिप्याधिकार अन्तर्गत प्रकाशित

नोट– विद्यार्थी उपर्युक्त पाठ्यक्रम को माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा प्रकाशित अधिकृत पाठ्यक्रम से मिलान अवश्य कर लें। माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा प्रकाशित पाठ्यक्रम ही मान्य होगा।

विषय-सूची

क्षितिज भाग-1

गद्य-खण्ड

1. दो बैलों की कथा	*प्रेमचन्द*	1-14
2. ल्हासा की ओर	*राहुल सांकृत्यायन*	14 25
3. उपभोक्तावाद की संस्कृति	*श्यामाचरण दुबे*	25-36
4. साँवले सपनों की याद	*जाबिर हुसैन*	36-45
5. प्रेमचन्द के फटे जूते	*हरिशंकर परसाई*	45-56
6. मेरे बचपन के दिन	*महादेवी वर्मा*	56-67

काव्य-खण्ड

7. कबीर	साखियाँ एवं सबद	68-79
8. ललद्यद	*वाख*	79-87
9. रसखान	*सवैये*	87-96
10. माखनलाल चतुर्वेदी	*कैदी और कोकिला*	96-108
11. सुमित्रानंदन पंत	*ग्राम-श्री*	108-118
12. सर्वेश्वर दयाल सक्सेना	*मेघ आए*	118-128
13. राजेश जोशी	*बच्चे काम पर जा रहे हैं*	128-136

कृतिका भाग-1 (पूरक पुस्तक)

1. इस जल प्रलय में	*फणीश्वरनाथ 'रेणु'*	137-143
2. मेरे संग की औरतें	*मृदुला गर्ग*	143-151
3. रीढ़ की हड्डी	*जगदीश चंद्र माथुर*	151-157

व्याकरण

1. शब्द-निर्माण (उपसर्ग-प्रत्यय)	158-172
2. विशेषण (लिंग और वचन का विशेषण पर प्रभाव)	172-184
3. परसर्ग या कारक 'ने' का क्रिया पर प्रभाव	184-192
4. वाक्य-रचना (सरल और संयुक्त वाक्य)	192-200
5. पर्यायवाची, विलोम तथा श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द	201-223
6. मुहावरे	223-237

अपठित-बोध

1. अपठित गद्यांश	**238-251**
2. अपठित काव्यांश	**251-263**

रचना

निबन्ध-लेखन

राष्ट्रीय एवं सामाजिक समस्यात्मक निबन्ध

1. मेक इन इंडिया **अथवा** स्वदेशी उद्योग 264
2. आत्मनिर्भर भारत 265
3. कोरोना वायरस—21वीं सदी की महामारी
   अथवा
   कोरोना वायरस महामारी के सामाजिक-आर्थिक प्रभाव 265
4. समाज में नारी का स्थान **अथवा** भारतीय नारी तब और अब
   अथवा
   राष्ट्र के उत्थान में नारी की भूमिका 266
5. राष्ट्र निर्माण में युवकों का योगदान **अथवा** राष्ट्रीय उत्थान में युवा वर्ग का योगदान
   अथवा
   राष्ट्र निर्माण में युवाओं की भूमिका 267
6. प्लास्टिक थैली : पर्यावरण की दुश्मन **अथवा** प्लास्टिक कैरी बैग्स : असाध्य रोगवर्धक 267
7. कन्या भ्रूण हत्या : लिंगानुपात की समस्या **अथवा** कन्या भ्रूण हत्या : एक जघन्य अपराध 268
8. आतंकवाद : एक विश्व समस्या **अथवा** आतंकवाद : समस्या एवं समाधान 269
9. रोजगार गारंटी योजना : मनरेगा **अथवा** गाँवों के विकास की योजना : मनरेगा 269
10. राजस्थान में बढ़ता जल-संकट 270
11. बाल-विवाह : एक अभिशाप 270
12. आतंकवाद : भारत के लिए चुनौती **अथवा** आतंकवाद : भारत की विकट समस्या 271
13. दहेज-प्रथा **अथवा** समाज का अभिशाप : दहेज प्रथा 272
14. मूल्यवृद्धि : एक ज्वलन्त समस्या **अथवा** बढ़ती महँगाई : एक विकराल समस्या 272
15. पर्यावरण प्रदूषण **अथवा** बढ़ता पर्यावरण प्रदूषण : एक समस्या 273
16. भ्रष्टाचार : एक विकराल समस्या **अथवा** देश में व्याप्त भ्रष्टाचार 273
17. जनसंख्या की समस्या एवं समाधान 274
18. बढ़ती भौतिकता : घटते मानवीय मूल्य 274
19. बढ़ते वाहन : घटता जीवन-धन **अथवा** वाहन-वृद्धि से स्वास्थ्य-हानि 275
20. राजस्थान का अकाल 276
21. बेरोजगारी : समस्या और समाधान **अथवा** रोजगार के घटते साधन 276
22. नारी सशक्तीकरण 277

शिक्षा एवं विज्ञान सम्बन्धी निबन्ध

23. बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ 277
24. सर्व शिक्षा अभियान **अथवा** सर्वशिक्षा अभियान को कैसे सफल बनाएँ 278
25. शिक्षित नारी : सुख समृद्धिकारी **अथवा** नारी-शिक्षा का महत्त्व 278
26. कम्प्यूटर शिक्षा का महत्त्व **अथवा** कम्प्यूटर शिक्षा की आवश्यकता 279

27. शिक्षा-सुधार में विद्यार्थियों की भूमिका 280
28. निरक्षरता : एक अभिशाप 280
29. विद्यार्थी जीवन में नैतिक शिक्षा की उपयोगिता **अथवा** नैतिक शिक्षा का महत्त्व 281
30. इन्टरनेट : वरदान या अभिशाप **अथवा** इन्टरनेट की उपयोगिता
अथवा
विद्यार्थी-जीवन में इन्टरनेट की भूमिका 281
31. मोबाइल फोन : वरदान या अभिशाप 282
32. आधुनिक सूचना-प्रौद्योगिकी **अथवा** सूचना क्रांति के युग में भारत 283
33. कम्प्यूटर के बढ़ते कदम और प्रभाव **अथवा** कम्प्यूटर के बढ़ते चरण 283
34. दूरदर्शन : वरदान या अभिशाप **अथवा** युवा पीढ़ी पर दूरदर्शन का प्रभाव 284
35. मानव के लिए विज्ञान-वरदान या अभिशाप **अथवा** विज्ञान के बढ़ते कदम 284

विचारात्मक निबन्ध

36. समय का सदुपयोग 285
37. जल संरक्षण : हमारा दायित्व **अथवा** जल है तो जीवन है 286
38. अनुशासनपूर्ण जीवन ही वास्तविक जीवन है **अथवा** विद्यार्थी जीवन में अनुशासन 286
39. स्वावलम्बन का महत्त्व 287
40. वर्तमान की महत्ती आवश्यकता : राष्ट्रीय एकता **अथवा** राष्ट्रीय एकता की आवश्यकता 287
41. समाज-निर्माण में पत्र-पत्रिकाओं की भूमिका **अथवा** समाचार-पत्रों का महत्त्व 288
42. कटते जंगल : घटता मंगल 288

पर्व-त्योहार सम्बन्धी निबन्ध

43. ऋतुराज वसन्त **अथवा** प्रकृति का सौन्दर्य : वसन्त 289
44. त्योहारों का महत्त्व **अथवा** त्योहार : जनमंगल के आधार 290
45. राजस्थान के प्रमुख पर्वोत्सव 290

स्वास्थ्य एवं खेलकूद सम्बन्धी निबन्ध

46. स्वच्छ भारत अभियान 291
47. खुला-शौचमुक्त गाँव 291
48. भारतीय संस्कृति का अनुपम उपहार : योग **अथवा** योग भगाए रोग 292
49. शिक्षा में खेलकूद का महत्त्व **अथवा** जीवन में खेलकूद की आवश्यकता 292
50. जब मैंने क्रिकेट मैच देखा **अथवा** आँखों देखे मैच का वर्णन 293

संस्कृति एवं पर्यटन सम्बन्धी निबन्ध

51. राजस्थान के प्रमुख लोकदेवता 294
52. राजस्थान के लोकगीत 294
53. नखरालो राजस्थान 295

संस्मरणात्मक निबन्ध

54. मेरे सामने घटित भीषण दुर्घटना **अथवा** जीवन की वह चिरस्मरणीय घटना 295
55. गुरुजी जिन्हें मैं भूला नहीं सकता **अथवा** मेरे आदरणीय गुरुजी 296
56. विद्यालय का अन्तिम दिन 296
57. परीक्षा का अन्तिम दिन 297
58. जीवन की वह चिरस्मरणीय यात्रा **अथवा** किसी रोचक यात्रा का वर्णन 298
59. भीषण वर्षा की वह रात **अथवा** जब मेरे गाँव में भीषण वर्षा हुई 298
60. चुनाव का एक दृश्य **अथवा** चुनाव की हलचल 299

विविध विषयात्मक निबन्ध

61. मेरी प्रिय पुस्तक (रामचरितमानस) 299
62. इक्कीसवीं सदी का भारत
अथवा
मेरे सपनों का भारत 300
63. यदि मैं भारत का प्रधानमंत्री होता 301
64. पर्यावरण संरक्षण परमावश्यक
अथवा
पर्यावरण संरक्षण के उपाय 301
65. मनोरंजन के आधुनिक साधन 302

संवाद-लेखन **303-309**

पत्र-लेखन
(औपचारिक एवं अनौपचारिक पत्र) **310-336**

प्रतिवेदन (रिपोर्ट)-लेखन **337-344**

क्षितिज : भाग-1

गद्य खण्ड

1. दो बैलों की कथा

(प्रेमचन्द)

लेखक-परिचय—महान् कथाकार एवं उपन्यास-सम्राट् मुंशी प्रेमचन्द का जन्म सन् 1880 में बनारस के पास 'लमही' गाँव में हुआ था। उनका मूल नाम धनपत राय था। प्रेमचन्द का बचपन अभावों में बीता और अभावों के बीच ही उन्होंने बी.ए. तक की शिक्षा प्राप्त की। शिक्षा विभाग में नौकरी की, परन्तु असहयोग आन्दोलन में भाग लेने हेतु सरकारी नौकरी से त्याग-पत्र दिया। ये स्वतन्त्र-लेखन में प्रवृत्त हुए। उन्होंने तीन सौ से अधिक कहानियाँ तथा ग्यारह प्रसिद्ध उपन्यासों की रचना की। इनके साथ ही कुछ पत्रिकाओं का भी सम्पादन किया। सन् 1936 में उनका देहान्त हो गया।

पाठ-सार—'दो बैलों की कथा' प्रेमचन्द की प्रसिद्ध कहानी है। झूरी काछी के दो बैलों के नाम थे—हीरा और मोती, दोनों बैल सीधे-सादे भारतीय लोगों के प्रतीक थे। वे ताकतवर और कमाऊ होते हुए भी अत्याचार सहते थे। कहानीकार ने इनके माध्यम से भारतीय लोगों की परतन्त्रता में होती दुर्दशा का संकेत किया है। पर उन दोनों बैलों में घनिष्ठ मित्रता थी। झूरी उनकी पूरी देखभाल करता था। एक बार झूरी ने उन्हें अपनी ससुराल भेज दिया। तब हीरा-मोती ने समझा कि उन्हें बेच दिया है। इस कारण मौका पाकर वे दोनों बैल वहाँ से भागकर आ गये। उन्हें फिर झूरी के ससुराल भेजा गया। इस बार भी वे वहाँ से भाग गये। मार्ग में एक खेत में चरते हुए पकड़े जाने पर उन्हें 'काँजीहौस' में लाया गया। वहाँ से उनकी नीलामी की गई और एक कसाई ने उन्हें खरीद लिया। कसाई के साथ चलते-चलते दोनों बैलों को उससे डर लगने लगा। इसलिए वे दोनों भागकर झूरी के घर आ गये। अपने प्यार करने वाले मालिक और अपने थान को पाकर वे खुश हुए। झूरी ने उनके पास चारा डाला तो उसकी पत्नी ने उनके माथे चूम लिये। इस तरह दोनों बैल प्रसन्नता से रहने लगे।

कठिन-शब्दार्थ—निरापद = सुरक्षित। अनायास = अचानक। मिसाल = उदाहरण। वंचित = रहित। विग्रह = लड़ाई। जालिम = अत्याचारी। गोई = बैलों की जोड़ी। चरनी = चारा खाने की जगह या पात्र। प्रतिवाद = विरोध। बछिया के ताऊ = मूर्ख। बेतहाशा = बिना होश-हवास के। जोखिम = खतरा। साबिका = सरोकार। चेत उठना = सावधान रहना। अंतर्ज्ञान = भीतरी समझ। अश्रद्ध = असम्मान से। पांगुर करना = जुगाली करना। रेवड़ = समूह, झुण्ड।

पाठ्यपुस्तक के प्रश्न

प्रश्न 1. काँजीहौस में कैद पशुओं की हाजिरी क्यों ली जाती होगी?

उत्तर—काँजीहौस में कैद पशुओं की हाजिरी कैद पशुओं की संख्या, उनकी विभिन्न आवश्यकताओं की पड़ताल, जिससे उनके खाने-पीने का इन्तजाम उसके अनुसार किया जा सके, पशुओं के व्यवहार का आकलन तथा सभी कैद पशुओं की उपस्थिति सुनिश्चित करने के लिए ली जाती होगी।

प्रश्न 2. छोटी बच्ची को बैलों के प्रति प्रेम क्यों उमड़ आया?

उत्तर—छोटी बच्ची की माँ मर चुकी थी। उसकी सौतेली माँ उसे मारती थी और उसके साथ अच्छा व्यवहार नहीं करती थी। वह माँ के बिछुड़ने का दर्द जानती थी। इसलिए हीरा-मोती की व्यथा देखकर उसके मन में उनके प्रति प्रेम उमड़ आया, क्योंकि उसे लगा कि वे भी उसी की तरह अभागे हैं।

प्रश्न 3. कहानी में बैलों के माध्यम से कौन-कौन से नीति-विषयक मूल्य उभरकर आए हैं?

उत्तर—प्रस्तुत कहानी में बैलों के माध्यम से अग्रलिखित नीति-विषयक मूल्य उभरकर सामने आये हैं—

(1) सरल-सीधा और अत्यधिक सहनशील नहीं होना चाहिए, क्योंकि अत्यधिक सीधे इन्सान को 'गधा' कहा जाता है। इसलिए मनुष्य को अपने अधिकारों के प्रति संघर्षरत रहना चाहिए।

(2) मनुष्य को हमेशा स्वामिभक्ति, सहयोग, निःस्वार्थ परोपकार, मित्रता और नारियों के प्रति सहयोग की भावना रखनी चाहिए।

(3) आजादी पाने के लिए मनुष्य को बड़े से बड़ा कष्ट उठाने के लिए हमेशा तैयार रहना चाहिए।

(4) मनुष्य को नारी जाति का सम्मान करने वाला, धर्म की मर्यादा मानने वाला तथा सच्ची आत्मीयता रखने वाला होना चाहिए।

प्रश्न 4. प्रस्तुत कहानी में प्रेमचन्द ने गधे की किन स्वभावगत विशेषताओं के आधार पर उसके प्रति रूढ़ अर्थ 'मूर्ख' का प्रयोग न कर किस नये अर्थ की ओर संकेत किया है?

उत्तर—प्रस्तुत कहानी में प्रेमचन्द ने गधे के लिए रूढ़ अर्थ 'मूर्ख' का प्रयोग न करके उसे सन्तोषी, सहनशील, सुख-दुःख में समान रहने वाला, क्रोधरहित एवं स्थिर व्यवहार वाला बताया है। इस आधार पर उसकी तुलना ऋषि-मुनियों के स्वभाव से की है। इस प्रकार कथाकार ने गधे के सहिष्णु, निरापद, सद्गुणी एवं सन्तोषी स्वभाव वाले अर्थ की ओर संकेत किया है।

प्रश्न 5. किन घटनाओं से पता चलता है कि हीरा और मोती में गहरी दोस्ती थी?

उत्तर—'दो बैलों की कथा' में कुछ घटनाएँ ऐसी हैं, जिनसे हीरा और मोती की गहरी दोस्ती का पता चलता है। यथा—

(1) वे एक-दूसरे को सूँघ कर व चाटकर अपना प्रेम प्रकट करते थे।

(2) दोनों बैलगाड़ी या हल में जोते जाने पर ज्यादा से ज्यादा बोझ स्वयं ढोने का प्रयास करते थे।

(3) मटर के खेत में दोनों मस्त होकर, सींग मिलाकर एक-दूसरे को ढेलने लगे। तब हीरा को क्रोधित देखकर मोती ने उसके साथ कठोर व्यवहार किया और दोस्ती को दुश्मनी में नहीं बदलने दिया।

(4) गया द्वारा हीरा की निर्दयतापूर्वक पिटाई करने पर मोती का क्रोध भड़क उठा और वह हल, जुआ आदि लेकर भाग निकला और उनको तोड़-ताड़कर बराबर कर दिया।

(5) दोनों मित्रों ने सहयोगी रणनीति से सांड का मुकाबला कर उसे परास्त किया।

(6) मटर के खेत में मोती के पकड़े जाने पर हीरा भी उसके पास आ गया। रण वालों ने उसे भी पकड़ लिया।

(7) काँजीहौस में दीवार गिराने पर जब हीरा की रस्सी नहीं टूटी तो मोती भी अकेले बाहर नहीं गया।

इस तरह के आचरण से दोनों में गहरी दोस्ती दिखाई दी।

प्रश्न 6. "लेकिन औरत जात पर सींग चलाना मना है, यह भूल जाते हो।"—हीरा के इस कथन के माध्यम से स्त्री के प्रति प्रेमचन्द के दृष्टिकोण को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—हीरा के उक्त कथन के माध्यम से प्रेमचन्द का स्त्री-जाति के प्रति सम्मान का भाव व्यक्त हुआ है। भारतीय संस्कृति में 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः' कथन से नारी को सम्मानित एवं पूज्या माना गया है। हमारे समाज में कुछ लोग स्त्री को केवल भोग्या तथा साधारण जीव मानते हैं, उसका शोषण-उत्पीड़न करते हैं, मारते-पीटते भी हैं, परन्तु प्रेमचन्द का ऐसा दृष्टिकोण नहीं रहा है। उन्होंने स्त्री को समता एवं सम्मान का पात्र बताया है।

प्रश्न 7. किसान जीवन वाले समाज में पशु और मनुष्य के आपसी सम्बन्धों को कहानी में किस तरह व्यक्त किया गया है?

उत्तर—कहानी में किसान जीवन वाले समाज में मनुष्य और पशु का घनिष्ठ संबंध बताया गया है। वे एक-दूसरे के सहायक और पूरक रहे हैं। किसान पशुओं को घर का सदस्य मानकर उनसे प्रेम करता है और पशु भी अपने स्वामी के लिए जी-जान देने को तैयार रहते हैं। झूरी हीरा-मोती को घर के सदस्यों की तरह स्नेह करता था। इसीलिए हीरा-मोती दो बार उसकी ससुराल से भाग कर अपने थान पर खड़े हुए थे। उन्हें देखकर वह ही नहीं उसकी पत्नी भी आनन्द से भर उठी थी। इससे पता चलता है कि किसान अपने पशुओं से मानवीय व्यवहार करते हैं।

प्रश्न 8. "इतना तो हो ही गया कि नौ-दस प्राणियों की जान बच गई। वे सब तो आशीर्वाद देंगे"—मोती के इस कथन के आलोक में उसकी विशेषताएँ बताइए।

उत्तर—इस कथन से ज्ञात होता है कि मोती स्वभाव से उग्र किन्तु परोपकारी, सहयोगी और दयालु बैल है। वह अत्याचार का विरोधी, पीड़ितों के प्रति सहानुभूति रखने वाला और आजादी का समर्थक है। इसीलिए वह काँजीहौस की दीवार तोड़कर बन्द पड़े पशुओं को आजाद कर देता है। उसे इस बात पर सन्तोष होता है कि अब चाहे कुछ भी हो। इतना तो हो गया कि मेरे प्रयास से नौ-दस प्राणियों की जान बच गयी। अतः वह आशावादी, स्वार्थहीन और साहसी पशु था।